है।

भाषा विकास

(Language Development)

भाषा उन महत्वपूर्ण कारकों में से एक है, जो मनुष्य को विश्व के समस्त अन्य जीवधारियों से अलग करती है तथा उसे सफलता एवं प्रगति के पथ पर बढ़ाती है। भाषा विचार विनिमय का साधन है और सामाजिक आदान-प्रदान का आधार भी है। मनुष्य ने आज तक जिस संस्कृति एवं सभ्यता को विकसित किया है, वह कुछ भाषा की सुदृढ़ भित्ति पर आधारित है। भाषा व्यक्ति की उन क्रियाओं का जीवन रक्त है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी संस्कृति को विकसित करता है।

(1) **हरलॉक** के अनुसार, "दूसरे व्यक्तियों के समक्ष अपने विचार व्यक्त करने की शक्ति तथा क्षमता भाषा कहते हैं।"

—**E. B. Hurlock**

(Language is the ability to communicate with others)

(2) **ब्राउनफील्ड** के अनुसार, "अन्य लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित करने की क्रिया को भाषा कहते

डमविल ने इस सम्बन्ध में लिखा है, "किसी जाति के भाषा-विकास का इतिहास उसकी बुद्धि-विकास का इतिहास है। अन्य प्राणियों की अपेक्षा, वह भाषा के कारण ही श्रेष्ठ है। भाषा तथा सभ्यता का विकास साथ-साथ होता है। प्रारम्भ में शिशु स्थूल वस्तुओं का ही प्रयोग करता है, बाद में वह भाषा का व्यवहार करने

Scanned with CamScanner

लगता है। शिक्षा का एक प्रधान उद्देश्य बालक को भाषा का समुचित ज्ञान कराना है। किसी भी व्यक्ति की बौद्धिक योग्यताओं का सर्वश्रेष्ठ माप उसका शब्द भण्डार है।"

विभिन्न विद्वानों ने भाषा को अपने शब्दों में परिभाषित किया है–

हरलॉक के अनुसार, "भाषा से तात्पर्य विचारों तथा अनुभूतियों का अर्थ व्यक्त करने वाले उन सभी साधनों से है जिसमें संज्ञान या विचारों के आदान-प्रदान के सभी पक्ष; जैसे–लिखना, बोलना, संकेत, चेष्टा की अभिव्यक्ति, हाव-भाव, मूक अभिनय एवं कला आदि सम्मिलित हैं।"

(Language encompases every means of communication in which thoughts and feelings are symbolized so as to convey meaning to others. It includes such widely differing forms of communication as writing, speaking, singing, language, facial expression, gesture, pantomime and art.)

स्टॉट (L.H. Stotts, 1974) के अनुसार, "व्यापक अर्थों में भाषा का आशय निःसन्देह ऐसे साधन से है जिसके द्वारा अर्थ एवं भाव का लोगों के बीच सम्प्रेषण होता है।"

(Language, in broad sense, of course, is any means what so ever of communicating meaning and feeling among individuals.)

इस प्रकार, उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि भाषा शब्द का अर्थ व्यापक एवं जटिल है। विचारों और भावों को व्यक्त करने वाले सभी माध्यम या साधन इसमें सम्मिलित हैं।

भाषा अन्य लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित करने की शक्ति है। जैसे-जैसे बालकों की भाषा का विकास होता है, उनमें दूसरों से सम्पर्क स्थापित करने की योग्यता का विकास भी होता जाता है।

मेकार्थी के अनुसार, विद्यालय के पूर्व के वर्षों में बालक द्वारा अभिव्यक्त भाषा में 96% प्रतिक्रियाएँ सामाजिक होती हैं। इस प्रकार भाषा में मुख्य कार्य व उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

(1) सूचनाएँ प्राप्त करना।

(2) अपने भावों की अभिव्यक्ति करना।

(3) दूसरों को प्रेरणा प्रदान करना।

(4) सामाजीकरण की प्रक्रिया में सहायता देना।

(5) भाषा विकास द्वारा बालक दूसरे लोगों से सम्पर्क स्थापित कर अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के विकास का अवसर प्राप्त करता है।

भाषा विकास की अवस्थाएँ
(Stages of Speech Development)

बालकों में भाषा विकास एक जटिल (Complex) एवं दीर्घकालिक प्रक्रिया है जो शिशु जन्म (Child Birth) के प्रथम क्रन्दन (Crying) से ही प्रारम्भ हो जाती है और जीवन पर्यन्त चलती रहती है। जीवन पर्यन्त व्यक्ति भाषा से सम्बन्धित तथ्यों को सीखता रहता है और अपने व्यक्तित्व का विकास करता रहता है। बालकों के भाषा विकास की कई अवस्थाएँ हैं। इनमें से कुछ अवस्थाएँ भाषा के विकास से पूर्व सम्प्रेषण (Pre-Speech Forms of Communication) से सम्बन्धित हैं तथा कुछ अवस्थाएँ वास्तविक भाषा की अभिव्यक्तियाँ (Speech Forms of Communication) से सम्बन्धित हैं। भाषा विकास की विभिन्न अवस्थाओं को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है–

(1) वाणी पूर्व अभिव्यक्ति के प्रकार (Pre-Speech Forms of Communication)–

(i) रोना या क्रन्दन (Crying)

(ii) कूकना तथा बबलाना (Cooing & Babbling)

(iii) हावभाव (Gestures)

(2) वास्तविक भाषा की अभिव्यक्तियाँ (Speech Forms of Communication)–

(i) आकलन शक्ति (Comprehension Power), (ii) उच्चारण (Pronunciation), (iii) शब्दावली (Vocabulary), (iv) वाक्य निर्माण (Sentence Formation)।

Scanned with CamScanner

भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक

(Factors Affecting Language Development)

प्रत्येक बालक में एक ही प्रकार से भाषा नहीं विकसित होती है। कोई बालक जल्दी बोलने लगता है, कोई देर में। किसी बालक का शब्द-भण्डार अधिक विकसित होता है, किसी को बहुत कम शब्दों की जानकारी होती है। इसी प्रकार, कोई बालक शब्दों का शुद्ध उच्चारण कर पाता है और किसी के भीतर भाषा-सम्बन्धी अनेक दोष पाए जाते हैं। अतः बालकों में भाषा-विकास की दृष्टि से काफी व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है। इन व्यक्तिगत भिन्नताओं तथा भाषा के विलम्बित या सीमित विकास के कई कारण होते हैं। भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारकों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

(i) **शारीरिक स्वास्थ्य** (Physical Health)—जो बालक स्वस्थ एवं निरोगी होते हैं उनका भाषा-विकास उन बालकों की तुलना में शीघ्र होता है जो बीमार एवं अस्वस्थ होते हैं। बीमारी के कारण बालक अन्य लोगों के सम्पर्क में नहीं आ पाता और भाषा-विकास की प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है। **स्मिथ** (1930) के अनुसार, जो बच्चे प्रारम्भिक वर्षों में बीमार नहीं पड़े थे, उनमें प्रथम शब्द 10 महीने में प्रदर्शित हुए जबकि बीमारी से ग्रस्त बच्चों में 11-12 महीने में सुना गया। **गैसल तथा सैरीसन** के अनुसार, बहरे बालकों का भाषा विकास देर से होता है। इसका कारण यह है कि उन्हें अनुकरण द्वारा भाषा सीखने का अवसर प्राप्त नहीं होता है।

(ii) **शारीरिक रचना** (Bodily Structure)—कुछ बालकों की शारीरिक रचना इस प्रकार की होती है कि शरीर के जो अवयव बोलने की क्षमता को विकसित करते हैं, जैसे होंठ, तालू, जीभ, स्वर यन्त्र आदि उनमें जन्मजात कोई दोष पाया जाता है और इस प्रकार उनका भाषा विकास रूक जाता है। बहरा शिशु दूसरों की आवाज सुन नहीं पाता हैं। अतः वह उन आवाज का अनुकरण नहीं कर पाता है। अतः जन्म के बहरे शिशु गूँगे भी होते हैं। इसी प्रकार, दृष्टिहीन बालकों का शब्द भण्डार सीमित होता है। दोषरहित शारीरिक अंगों की रचना वाले बालक जल्दी बोलना सीख जाते हैं।

(iii) **लिंग भेद** (Sex Difference)—वाणी विकास, उच्चारण तथा शब्द भण्डार पर लिंग भेद का भी प्रभाव प्राप्त है। एक अध्ययन के अनुसार, 95 बच्चों की ध्वनियों का विश्लेषण किया गया। इन बच्चों की आयु 1-30 माह के मध्य थी। अध्ययन में पाया गया कि प्रथम वर्ष में बालकों एवं बालिकाओं की ध्वनियों में अन्तर नहीं था परन्तु द्वितीय वर्ष के बाद बालिकाओं ने बालकों की अपेक्षा अधिक दक्षता का प्रदर्शन किया। बोलचाल में बालिकाएँ अधिक तेज पाई गईं। बालकों के शब्द भण्डार की तुलना में बालिकाओं के शब्द भण्डार में अधिक शब्द होते हैं। **मीड** (1913) के अनुसार, बालक 15.76 महीने में और बालिकाएँ 14.88 महीने में बोलना शुरू कर देती हैं।

(iv) **बुद्धि** (Intelligence)—जिन बालकों की बुद्धिलब्धि उच्च होती है, वे जल्दी बोलना सीख जाते हैं तथा भाषा सम्बन्धी श्रेष्ठता प्राप्त कर लेते हैं। टरमन, शर्ले, गैरीसन तथा मैकार्थी ने अपने परीक्षण से यह निष्कर्ष निकाला कि बालकों के बौद्धिक स्तर भाषा विकास का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी प्रकार **स्पाईकर** तथा **हरविन** का कथन है कि बालक की बुद्धिलब्धि तथा उनकी भाषा सम्बन्धी योग्यता में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य बुद्धि वाले बालकों से कुशाग्र बुद्धि वाले बालक चार माह पूर्व

Scanned with CamScanner

बोलना आरम्भ कर देते हैं जबकि कम बुद्धि वाले बालक कभी-कभी 2½-3 वर्ष बाद तक भाषा की योग्यता का विकास कर पाते हैं। टरमन, फिशर, यंग मैकार्थी तथा थापसन के अनुसार कुशाग्र बुद्धि वाले बालकों का शब्द भण्डार विस्तृत होता है। इसके विपरीत कुछ विद्वानों जैसे जरसील्ड, सिरकन तथा लायंस के अनुसार यह आवश्यक नहीं है कि कम बुद्धि वाले बालकों की भाषा का विकास देर से होता है।

(v) सामाजिक आर्थिक स्तर (Socio-Economic Status)--परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति भी उस परिवार के बालक के भाषा विकास को प्रभावित करती है। मनोवैज्ञानिक **जरसील्ड** के अनुसार, सुसंस्कृत, सभ्य, सम्पन्न एवं उन्नत परिवार के बालकों में भाषा विकास की प्रक्रिया तेजी से एवं सन्तोषजनक रूप से होती है, क्योंकि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवार के बालकों को सीखने के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। जरसील्ड, मैकार्थी, डेविस तथा यंग के अनुसार, उच्च स्तर के परिवारों के बालक, (i) अधिक बोलते हैं, (ii) जल्दी बोलना सीखते हैं तथा (iii) उनका उच्चारण शुद्ध होता है। इसके अतिरिक्त उनका शब्द भण्डार भी विस्तृत होता है तथा बोलने की आधुनिकतम शैली होती है। इसका प्रमुख कारण उच्च स्तर के परिवारों का भौतिक, सामाजिक एवं नैतिक वातावरण अच्छा होता है एवं स्नेह सम्बन्ध होना है, इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवार में बालक तथा परिवार के अन्य सदस्यों के मध्य पारस्परिक, पारिवारिक स्नेह सम्बन्ध का अभाव होता है। अतः इन बालकों में अनुकरण एवं प्रत्यक्ष बोध अनुभव की प्रक्रिया सामान्य एवं सन्तोषजनक रूप से घटित नहीं होती है। इस कारण उनके भाषा विकास की प्रक्रिया अवरूद्ध होती है।

(vi) परिपक्वता (Maturation)—भाषा विकास के लिए परिपक्वता भी महत्वपूर्ण है। आवश्यक परिपक्वता के अभाव में भाषा का प्रशिक्षण देने पर प्रत्याशित परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं और बच्चों में नकारावृत्ति के उत्पन्न होने का भय भी रहता है। **हरलॉक** के अनुसार, भाषा का प्रशिक्षण देते समय यह ध्यान अवश्य देना चाहिए कि बच्चों में आवश्यक परिपक्वता आ चुकी है अथवा नहीं। जैसे-जैसे ये अंग परिपक्वता प्राप्त करते जाते हैं उसी क्रम से भाषा विकास होता जाता है।

(vii) अभिप्रेरणा (Motivation)--भाषा विकास पर अभिप्रेरणा का भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। बच्चे जिन वस्तुओं की तरफ उन्मुख होते हैं या जिन्हें प्राप्त करना चाहते हैं, यदि उनका नाम बता दिया जाये तथा नाम बोलने पर उन्हें पुरुस्कृत किया जाये तो भाषा-विकास की गति बढ़ती है; जैसे—दूध की बोतल दिखाकर पूछा जा सकता है कि बेटा क्या पियेगा ? तो वह कहेगा दूध। इस प्रकार जब बालक बार-बार शब्दों को बोलने लगता है तो उसे अपने द्वारा उच्चारित शब्दों को सुनकर आनन्द आता है तथा वह बार-बार उसी शब्द को बोलने की कोशिश करता है।

(viii) बातचीत की इच्छा (Desire to Communicate)—बालक में दूसरे लोगों से बातचीत करने की इच्छा रहती है। यह इच्छा जितनी तीव्र होगी उतनी ही अधिक उसे बोलने की प्रेरणा मिलेगी। इसी प्रकार बालक अधिक समय बोलने, सीखने में लगाएगा तथा जल्दी ही बोलना सीख जायेगा।

(ix) द्विभाषावाद (Bilingualism)—बालक के भाषा विकास पर इसका प्रभाव भी पड़ता है कि वे एक साथ कितनी भाषाएँ सीख रहा है। यदि मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा भी बालक को सिखाई जा रही है तो इसका उसके बोलने पर निषेधात्मक प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव यह होगा कि दोनों भाषाओं को साथ-साथ सीखने के कारण बालक को भ्रम होगा और भाषा विकास की प्रक्रिया पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। ऐसे होने के कारण बच्चे बोलने में अत्यधिक सावधानी रखेंगे तथा उनकी बोली में प्रवाह नहीं आ पायेगा। **स्मिथ** (1939) के अनुसार, दो भाषाएँ साथ-साथ सीखने से त्रुटियाँ बढ़ती हैं। अतः प्रारम्भ में दो भाषाओं का शिक्षण नहीं करना चाहिए।

(x) पारिवारिक सम्बन्ध (Family Relationship)—बालक के पारिवारिक सम्बन्ध भी भाषा विकास को प्रभावित करते हैं। जिन बालकों के पारिवारिक सम्बन्ध अच्छे होते हैं वे बालक अच्छी प्रेरणा द्वारा शीघ्र ही बोलना सीख जाते हैं। एक अध्ययन के अनुसार, पारिवारिक सम्पर्क से अलग रहने वाले बच्चे रोते अधिक हैं और बबलाते कम हैं। उनके मुँह से निकलने वाली ध्वनियों की संख्या भी कम होती है। अतः उनका भाषा विकास देर से होता है। इसके विपरीत, जो बालक परिवार के साथ रहते हैं वे शीघ्र ही शुद्ध बोलना सीख जाते हैं।

Scanned with CamScanner